अंतरा-शब्दशक्ति

विवेकानन्द
एक आदर्श

संस्थापक - डॉ. प्रीति सुराना

www.antrashabdshakti.com

विवेकानंद एक आदर्श
(साझा संकलन)

संपादक
डॉ. प्रीति सुराना

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-66-6

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०११९- डॉ. प्रीति सुराना

मूल्य - ५०.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

VIVEKANAND EK ADARSH EDITED BY DR. PRITI SURANA

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

1. विवेकानंद एक आदर्श 5
2. भारतीयता के प्रतीक स्वामी विवेकानंद 7
3. ध्येय वाक्य 11
4. कायाकल्प 12
5. युवा शक्ति निर्माता 14
6. नमन स्वामी विवेकानंद 15
7. देश का युवा 15
8. भारत भाल के ओज केंद्र 16
9. एक और विवेकानन्द 17
10. मनहरण घनाक्षरी 18
11. हे विवेक 19
12. स्वामी विवेकानंद 20
13. स्वामी विवेकानंद से गुणी बनो 21
14. दुनिया में हुये चंद स्वामी विवेकानंद 22
15. युग पुरुष विवेकानंद को समर्पित 23
16. तांका चतुष्पद 24
17. बन गए आदर्श 25

18. सच्चे सपूत
26
19. उठो, जागो और चल दो 27
20. फिर विवेकानंद आ जाएं 28
21. मैं विवेकानंद बोलता हूं!! 30
22. युवा महानायक 32

विवेकानंद एक आदर्श

हमारे देश में अनेक महापुरूष हुए जिनके जीवन और विचार को आदर्श मानकर कोई भी व्यक्ति बहुत कुछ सीख सकता है। उनमें से एक नाम है स्वामी विवेकानंद, उनके विचार ऐसे हैं कि निराश व्यक्ति भी अगर उसे पढ़े तो उसे जीवन जीने का एक नया मकसद मिल सकता है,...!

स्वामी विवेकानंद बारे में ये खास बातें

उनका का जन्म 12 जनवरी 1863 को हुआ था। उनका वास्तविक नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। उन्होंने अमेरिका स्थित शिकागो में सन् १८९३ में आयोजित विश्व धर्म महासभा में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया था। भारत का आध्यात्मिकता से परिपूर्ण वेदान्त दर्शन अमेरिका और यूरोप के हर एक देश में स्वामी विवेकानन्द की वक्तृता के कारण ही पहुँचा। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी जो आज भी अपना काम कर रहा है। वे रामकृष्ण परमहंस के सुयोग्य शिष्य थे। वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु स्वामी विवेकानंद का देहावसान ४ जुलाई,१९०२ को हुआ।

विशिष्ट महापुरुष स्वामी विवेकानंद के **कुछ अनमोल विचार** निम्नलिखत हैं, जो जीवन की दिशा को बदल सकते हैं,...

1. जितना बड़ा संघर्ष होगा जीत उतनी ही शानदार होगी।
2. एक समय में एक काम करो, और ऐसा करते समय अपनी पूरी आत्मा उसमे डाल दो और बाकी सब कुछ भूल जाओ।
3. जिस समय जिस काम के लिए प्रतिज्ञा करो, ठीक उसी समय पर उसे करना ही चाहिये, नहीं तो लोगो का विश्वास उठ जाता है।
4. लोग तुम्हारी स्तुति करें या निन्दा, लक्ष्य तुम्हारे ऊपर कृपालु हो या न हो, तुम्हारा देहांत आज हो या युग में, तुम न्यायपथ से कभी भ्रष्ट न हो।
5. जब तक आप खुद पे विश्वास नहीं करते तब तक आप भगवान पर विश्वास नहीं कर सकते।
6. पवित्रता, धैर्य और उद्यम- ये तीनों गुण मैं एक साथ चाहता हूं।
7. उठो और जागो और तब तक रुको नहीं जब तक कि तुम अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेते।

8. जब तक जीना, तब तक सीखना, अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।
9. पढ़ने के लिए जरूरी है एकाग्रता, एकाग्रता के लिए जरूरी है ध्यान। ध्यान से ही हम इन्द्रियों पर संयम रखकर एकाग्रता प्राप्त कर सकते है।
10. ज्ञान स्वयं में वर्तमान है, मनुष्य केवल उसका आविष्कार करता है।

प्रस्तुत पुस्तक "विवेकानंद एक आदर्श" में अन्तरा-शब्दशक्ति के रचनाकारों द्वारा विविध विधाओं में स्वामी विवेकानंद के लिए प्रस्तुत किये गए विचारों का संकलन है। आशा है यह विशेष संकलन सभी को रुचिकर लगेगा।

संकलनकर्ता
संस्थापक:- अन्तरा-शब्दशक्ति
डॉ. प्रीति सुराना
वारासिवनी
जिला बालाघाट (म।प्र।)
9424765259
antrashabdshakti।com
antrashabdshakti@gmail।com

भारतीयता के प्रतीक स्वामी विवेकानंद

यह सर्वविदित है कि भारतीय सभ्यता विश्व की एकमात्र ऐसी सभ्यता है जिसकी तारतम्यता एवं निरंतरता विश्व इतिहास के प्राचीनतम कल से आज तक बनी हुई है। विश्व की छह मूल सभ्यताओं भारत, चीन, मेसोपोटामिया, मिस्र, रोम और यूनान में से भारतीय सभ्यता ही ऐसी है जिसने अपना मौलिक स्वरूप आज भी बनाए रखा है।ग्रीस और रोम को ईसाइयत ने मिस्र और मेसोपोटामिया को इस्लाम ने और चीन की सभ्यता को साम्यवाद ने समाप्त कर दिया। भारत इस प्रकार के परिवर्तनों से अछूता रहा। मानव द्वारा उत्पादित ज्ञान के आदान-प्रदान का माध्यम , व्याकरण और गणित दोनों विधाओं को देने वाली भारतीय संस्कृति एक लंबे समय तक विश्व गुरु के सिंहासन पर आसीन रही। मध्यकाल पतन का कल आया।

सोमनाथ का ध्वंस, नालंदा विश्वविद्यालय को तुर्कों द्वारा अग्नि को भेंट किया जाना बलात् धर्म परिवर्तन और हमारी संस्कृति का उपहास किया जाना एक आम हो गई। आधुनिकता के नाम पर हम अपनी ही भाषा, संस्कृति, ज्ञान- विज्ञान आदि को हेय समझने लगे। लेकिन इस सभ्यता का पुनरुत्थान होना है और इसे पुनः सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शक भी बनना है इसी कारण मध्यकाल में भक्ति आंदोलन ने और आधुनिक युग में अनेक महान पुरुषों में से एक स्वामी विवेकानंद का इस धरा पर अवतरण हुआ।

स्वामी विवेकानंद एक महान पुरुष होने के साथ-साथ स्वयं भारतीयता के अवतार थे। मकर संक्रान्ति के दिन १२ जनवरी १८६३ को कलकत्ता में उनका जन्म हुआ। भारत में अनेक त्योहार मनाए जाते है, किन्तु मकर संक्रान्ति किसी न किसी रूप में सम्पूर्ण भारत में कहीं लोहड़ी, तो कहीं बिहु, कहिन पोंगल के रूप में मनाई जाती है। राष्ट्रीय एकता के प्रतीक इस सांस्कृतिक पर्व के दिन उनका जन्म लेना अपने आप में भारतीयता एवं हिंदू राष्ट्र के उत्थान की ओर एक दिव्य संकेत है।

बचपन से ही आध्यात्म की ओर झुकाव, युवावस्था में रामकृष्ण परमहंस जैसे आध्यात्मिक पुरुष को अपना गुरु बनाना, सदैव राष्ट्रीयता से ओट-प्रोत रहना, अँग्रेजी का अच्छा ज्ञान होते हुए भी भारतीय भाषाओं के महत्व को न भुलाना, हिंदू पूजा-पद्धति को पर्याप्त महत्व देते हुए भी अन्य पंथों को समान आदर देना,धर्मांतरण का विरोध करना, विश्व के अन्य देशों से लौटने के बाद भारत की मिट्टी को शरीर पर मल कर स्वयं को पवित्र हुआ मानना, भारत के ज्ञान और आध्यात्म पर गार्ब करना,

किन्तु यहाँ की दरिद्रता और लोगों में फैले अंधविश्वास, निरक्षरता एवं बुरे स्वास्थ्य पर अत्यधिक दुखी होना, दुर्दशा को देख कर निराश न होना बल्कि आशावादी होकर यह उम्मीद रखना कि भारतमाता पुनः परम वैभव को प्राप्त करेगी, भारत पुनः संसार का मार्गदर्शक बनेगा आदि विचारों को सदैव मानते रहना उनके घोर राष्ट्रवादी होने का संकेत है।

विवेकानंद को अपनी माता भुवनेश्वरी देवी से स्वयं के अंदर झाँकने, आत्मसंयम तथा आत्मनियंत्रण के संस्कार प्राप्त हुए और पिता श्री विश्वनाथ दत्ता से बाहरी जगत को समझने की उदार दृष्टि प्राप्त हुई। अगर हम थोड़ा विचार करें तो पाएँगे कि भारतमाता सदैव से ही ऐसी संतानों को जन्म देती आई है जिन्होंने आत्मसंयम से प्राप्त ज्ञान को विश्व में उदारतापूर्वक बाँटा है।

विवेकानंद ने सदैव वेद, उपनिषद, भगवदगीता, रामायण, महाभारत और पुराण आदि के अध्ययन, चिंतन, मनन में गहरी रुचि ली। परिवार के राजपुरा प्रवास में विवेकानंद को १८७७ से १८७९ दो वर्षों तक चिंतन-मनन एवं माता-पिता से वार्तालाप का पर्याप्त समय मिला।यहीं से उनकी आध्यात्मिक यात्रा एवं राष्ट्रनिर्माण की साधना का प्रारंभ माना जा सकता है। कलकत्ता में रहते हुए विवेकानंद ने पश्चिम के इतिहास एवं दर्शन का भी अध्ययन किया एवं वहाँ के विद्वानों से पत्रों द्वारा सम्पर्क भी रखा। विचारणीय है कि आज भी ऐसे युवकों की आवश्यकता है जो पश्चिम की समझ रखते हुए भारतीय संस्कारों को न भुलाएँ। विवेकानंद के प्रोफेसर ने उन्हें प्रोडिजी (prodigy) तथा उनके स्कॉटिश चर्च कॉलेज के प्रिंसिपल ने जीनियस कह कर पुकारा था।

विवेकानंद भारतमाता के पुत्र एवं भारतीयता के अवतार थे। उनके जीवन कल में वे सभी महत्वपूर्ण प्रक्रियाएँ प्रारम्भ हो गई थी जिनसे आज के एवं भविष्य के भारत की आधारशिला रख दी गई थी। १८८१ से १८८६ तक विवेकानंद रामकृष्ण परमहंस के सम्पर्क में रहे। निवास मठ में रहा जिसकी स्थापना उन्होंने स्वयं की थी। १८८७ से १८९३ तक भ्रमण करने वाले सन्यासी का व्रत धारण कर देश-विदेश में भ्रमण किया, अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस के विचारों, उपदेशों एवं अनुभूतियों का प्रचार-प्रसार किया।

इन्होंने जापान १८९३, यूरोप १८९३-१८९७ तक की यात्राएँ की। प्रसिद्ध व्याख्यान ११ सितम्बर १८९३ में शिकागो में दिया। भारत लौटने पर इन्हें अति स्नेह और सम्मान मिला। दक्षिण में पंबन नमक स्थान पर रामानाद के राजा ने स्वयं स्वामी

विवेकानंद के रथ को अपने हाथों से खींचा, युवाओं ने हर स्थान पर उनका स्वागत किया।

स्वदेश लौटने पर उन्होंने कोलम्बो से अल्मोड़ा तक की यात्रा की, स्थान-स्थान पर भाषण दिए। इनमें सभी के उत्थान, जाति प्रथा का अंत, विज्ञान की पढ़ाई को बढ़ावा, देश का औद्योगिकरण, ग़रीबी को दूर करने तथा औपनिवेशिक शासन का अंत करने का आह्वान किया गया। महात्मा गांधी, तिलक तथा विपिन चंद्र पाल भी उनके भाषणों से प्रभावित हुए। १ मई १८९७ को कलकत्ता में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की गई। इन्होंने जमशेद जी टाटा को शोध और शिक्षा के लिए एक संस्थान स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। स्वामी विवेकानंद के जीवन, विचारों एवं क्रियाकलापों का अध्ययन करके हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि आज के भारतीय समाज को स्वामी विवेकानंद की उतनी ही आवश्यकता है जितनी आज से पहले थी। अच्छे संस्कारों से दूर भागती हुई नई पीढ़ी, नशे की समस्या, भ्रष्टाचार, राजनीति और प्रशासन से जुड़े लोगों के प्रति आम आदमी का अविश्वास, अर्थव्यवस्था, विकास और नई तकनीकों के लिए विज्ञान की आवश्यकता आदि समस्याओं से जूझते भारत की ओर अगर हम देखें तो अनेक समस्याओं का समाधान स्वामी विवेकानंद के विचारों में दिखाई देता है। इन संकटों के अतिरिक्त एक और बड़ा संकट जो हमारे द्वार पर दस्तक दे रहा है वह है कुछ पढ़े-लिखे लोगों की सोच कि पश्चिमीकारण ही भारत की समस्याओं का समाधान कर देगा।। इस वैचारिक दरिद्रता से अगर पार पाना है तो आशा की किरण के रूप में स्वामी विवेकानंद हमें दिखाई देते हैं। निसंदेह वे आज भी प्रासंगिक हैं।

स्वामी विवेकानंद की मृत्यु के कई वर्ष बाद गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने फ्रान्सीसी लेखक रोमां रोलां को कहा था।।।" अगर आप भारत को जानना चाहते हैं तो आप विवेकानंद का अध्ययन करें, उसमें सब कुछ सकारात्मक है, नकारात्मक कुछ भी नहीं।"

स्वामी विवेकानंद के कहे शब्दों को देखे।।।।।

••सत्य के लिए सब कुछ छोड़ा जा सकता है, पर उसे किसी के लिए नहीं छोड़ा जा सकता।

••विचार और कार्य की स्वतंत्रता ही जीवन में उन्नति और कुशलता का एकमात्र साधन है।

••शक्ति जीवन की और दुर्बलता मृत्यु की निशानी है।

••वैराग्य के बिना कोई भी अपने सम्पूर्ण अंतःकरण को परोपकार में नहीं लगा सकता।

••उन लोगों के न तो पास बैठो और न उन्हें अपने पास बैठाओ जिनकी बातों से तुम्हारे चित्त को उद्विग्नता या अशांति मिलती है।

ऐसे कितने ही अनमोल विचार हैं जो निराशा, अनिर्णय, दुविधा की स्थिति से निकाल कर अपना जीवन दर्शन, अपना लक्ष्य निश्चित करने में सहायक बनते हैं। ऐसे स्वामी विवेकानंद को आज उनके जन्मदिवस पर शत-शत नमन।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

ध्येय वाक्य

(सत्यकथा पर आधारित)

हीरा अपने जीवन का वह दिन नहीं भूल सकती,जब उसने विद्यालय से महाविद्यालय में आकर स्नातक प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया था, मन में नित्य उत्साह रहता था, और एक दिन विवेकानंद जी के जन्मदिवस पर निबंध, वादविवाद, भाषण की प्रतियोगिताओं के आयोजन होने की खबर मिली तो वह भी विवेकानंद से संबंधित अध्ययन सामग्री जुटाने के लिए सहेलियों के साथ प्रथम बार जिला पुस्तकालय में गई, वहां हिंदी,अंग्रेजी, इतिहास सभी विषयों पर रखी अनगिनत पुस्तकों को देख अभिभूत हो उठी, सोचने लगी कि काश मैं यहां रोज आ पाती, कितने भाग्यशाली हैं यहां पर काम करने वाले लोग जो ऐसी बढ़िया जगह में रहते हैं रोज जो मन चाहे पढ़ते हैं, मन ही मन सोचती हुई 'विवेकानंद जीवन और दर्शन' पुस्तक लिया पढ़कर निबंध लेखन व भाषण देने तैयारी की, युवा सप्ताह पर्यंत तो ग्रंथालय के दर्शन नहीं हुए, न प्रतियोगिताओं में कोई विशेष स्थान हासिल हुआ लेकिन विवेकानंद जी की एक बात उसके मन में बस गयी वो थी, "उतिष्ठत जागृत प्राप्य वरान्निबोधयत" के ऊपर आधारित उनका प्रमुख वाक्य जो उस समय और आज भी युवाओं के लिए अटल प्रेरणा वाक्य बन हुआ है "ऊठो जागो और लक्ष्य की प्राप्ति तक अनवरत प्रयास करते रहो" उसी को अपने जीवन का ध्येय वाक्य बना हीरा भी अपनी प्रिय सखी से ग्रंथालय का सदस्यता पत्र उधार लेकर प्रतिदिन पुस्तकालय जाती अपने पसंद की भारतीय इतिहास, संस्कृति, हिंदी साहित्य,राजनीति, इत्यादि की पुस्तकें निकालती पढ़ती, फिर जमा करती और धीरे धीरे उसकी पुस्तकालयों की सेवा में ही जीवन समर्पित करने की चाह बढ़ने लगी, और कहते हैं कि जहां चाह वहां राह जल्दी ही उसके विश्वविद्यालय में भी पुस्तकालय-विज्ञान का विषय पढ़ाया जाने लगा जिसको हीरा ने बिना मौका गवांए लपक लिया, और जब तक पुस्तकालयाध्यक्ष न बन गई प्रयास करती रही, उसके इस प्रयास में जैसे देशकाल परिस्थितियों ने भी खूब सहयोग दिया, आज भी अगर वह एक प्रतिष्ठित सरकारी संस्थान में पुस्तकालय अध्यक्ष है इसका श्रेय वह विवेकानंद जी के उस ध्येय वाक्य को ही देती है।

रचना उपाध्याय

कायाकल्प

सर्पीली- काली सड़क पर गाड़ी अपनी रफ़्तार में थी, दूर-दूर तक हरियाली मन को मुग्ध कर रहा था, सालों बाद पिंटू भैया से मिलना होगा। मन बरसों पहले के धनबाद शहर में जा पहुंचा। प्रचंड गर्मी की एक इतवार की सुनसान दोपहरी थी।कोई बहुत हड़बड़ाते हुए, दरवाजा पीट रहा था।

पापा ने दरवाजा खोला और आश्चर्य से बोला-अरे,पिंटू क्या बात है? बिना कोई जवाब दिए,पिंटू भैया अपना बैग संभाले,जल्दी से अंदर आकर, दरवाजा बंद कर लिये, ताकि कोई देख न ले।पिंटू मेरा मेरे पापा के फुफेरे भाई के बेटे हैं। पढ़ाई में बड़े जहीन थे,जमशेदपुर में मेडिकल की पढ़ाई कर रहे थे, आकर्षक- कद के भैया, बड़े शौकीन किस्म के थे,अभी भी उनके हिप्पी-कट बाल उनकी छोटी टोपी के बाहर बेतरतीब लहरा रहे थे। मैंने नींबू -पानी लाकर उनके पास रख दी,मम्मी खाने-पीने की व्यवस्था में लग गई। यह तो लग रहा था कि,कालेज में गर्मी की छुट्टियां हो गई हैं और वे आये हैं,किंतु अपने घर नहीं जाकर, यहां? एक ही शहर में रहने के कारण हमलोग की पारिवारिक घनिष्ठता थी।थौडी देर के बाद, सारांश यह निकला कि,, उनके घर किसी को पता नहीं है कि वे धनबाद में है। वे कालेज से मारपीट कर के भागे हुए हैं, मारपीट का स्पष्टीकरण उन्होंने नहीं दिया। खैर, दो-चार दिन के बाद वे अपने घर चले गए।उसके बाद चाचा-चाची ने जो बताया, उससे पता चला कि अपने आशिक-मिजाजी में, अक्सर नर्सों को छेड़ने की उन्हें बुरी आदत है। अब वे इतने दु:साहसी हो गये हैं कि, इस बार अपनी सीनियर को छेड़ दिया। मामले ने इतना तूल पकड़ा कि इन्हें जान बचाकर भागना पड़ा। कहते-कहते चाचा-चाची, लगभग रो पड़े और कहने लगे। समझा-बुझाकर हमलोग हार गए हैं, अब तुम ही लोग कुछ करो। मेरे इकलौते बच्चे को राह दिखा दो। अगले ही सप्ताह भैया का जन्मदिन था। मम्मी को एक आइडिया आया। भैया पढ़ने के शौकीन थे ही, मम्मी ने स्वामी विवेकानंद की जीवनी उन्हें उपहार में दिया और कहा, पढ़कर बताना, कैसी लगी? छुट्टियां खत्म होने को थी, पिंटू भैया हम सबसे मिलने घर आये और मम्मी को धन्यवाद देते हुए गंभीर स्वर में कहा कि चाची जी, स्वामी जी से आपने मेरा परिचय करवाया है, आप मेरी गुरु है और गुरू-दक्षिणा के तौर पर आपको वचन देता हूं कि अपने निजी एवं प्रोफेशनल-जीवन में स्वामी विवेकानंद के विचारों को स्थान दूंगा।साथ ही, विवेकानंद की एक पुस्तक, जो संभवतः उन्होंने खरीदी थी, वह भी दिखाई। मम्मी के पांव छूते हुए भी वे बहुत शांत एवं शालीन लग रहे थे, उनके हिप्पी-कट बाल, आर्मीकट का रुप ले चुके थे। धीरे-धीरे जिंदगी अपने ढर्रे पर आ गई। चाचाजी का तबादला हो गया, कभी-कभार उनलोगो की खबर मिल जाती। मेरी शादी में जब वे लोग आये तो पता चला, पिंटू भैया मुख्यमंत्री के डाक्टर-पैनल में है। गाहे-बगाहे,खबर मिलती रही कि पिंटू भैया गांव-गांव जाकर लोगों के स्वास्थ्य-सेवा का कार्य करते हैं, उनके क्षेत्र में लोग उन्हें भगवान मानते हैं, वगैरह, वगैरह। पिछले महीने पति का तबादला रांची हो जाने से मैं पिंटू भैया से मिलने को बहुत उत्सुक थी। मैंने उन्हें फोन किया तो, उन्होने, मुझे अगले शनिवार जरुर आने को कहा। घर शहर से जरा हटकर था, हमलोग नियत समय पर पहुंच गए। देखा, वहां बड़ा जलसा हो रहा है। अंदर जाकर देखा तो, सामने स्वामी विवेकानंद की जयंती मनाई जा रही है। स्वामी जी की आदमकद तस्वीर पर

माल्यार्पण हो चुका था, भैया हर आने-जाने वाले से विनम्रता से मिल रहे थे, बहुत से लोग उनके पांव छू रहे थे। लोग उन्हें 'डाक्टर-साहब' के नाम से संबोधित कर रहे थे, न प्रत्यूष या डॉ प्रत्यूष भी किसी को कहते नहीं सुना।

सौम्य-संभ्रात चेहरे पर उम्रजन्य प्रौढता, संयत-शांत-स्वर में पिंटू-भैया ने पूछा कि कैसी हो? आओ मेरे भगवान को पहले श्रद्धांजलि अर्पित करो। स्वामी जी को पुष्प अर्पित करके, प्रणाम किया और यथास्थान बैठ गई। व्यस्त पिंटू भैया को देख कर ऐसा लगा मानो, आज फिर, 'नरेंद्र दत्त' 'विवेकानंद' के रूप में हमारे बीच हैं।

---पूनम (कतरियार)

युवा शक्ति निर्माता

भारत की वसुंधरा पर अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया। उनमें राष्ट्र के युवाशक्ति निर्माता स्वामी विवेकानंद का नाम भी प्रमुख है। इनका जन्म 12 जनवरी 1863 में कलकत्ता में हुआ था। ये श्री विश्वनाथ दत्ता एवं श्रीमती भुवनेश्वरी देवी की अद्भुत संतान थे। वे बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के धनी थे। अपनी शिक्षा और धर्म प्रचार के लिए विदेश भी गए। उन्होंने बहुत से सामाजिक कार्य देश में किए। वे गुरु स्वामी परमहंस के परम शिष्य थे। धर्म से संबंधित अनेक किताबें लिखीं उन्होंने, जो युवा वर्ग को आज भी ओज से भरने और उन्हें अपनी शक्ति पहचानने में सहायक सिद्ध होती है।

स्वामी विवेकानंद द्वारा दिए गए कुछ सारगर्भित अनमोल वचन हमेशा मार्गदर्शन करते हैं जैसे -

जो जितनी गलती करता है, वो उतना ही सीखता है।
ज्ञान स्वयं वर्तमान है, मनुष्य केवल निर्माता है।
अनुभव से हमें सीख मिलती है।
निरंतर सीखना जीवन है
आत्मा के लिए असंभव कुछ भी नहीं ।
जिस शिक्षा से चरित्र का निर्माण हो, वही सर्वोत्तम शिक्षा है।

उपरोक्त बातें यदि युवा शक्ति आज अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर चलें तो राष्ट्र की प्रगति में अपना अमूल्य योगदान दे सकती है।

भारत के इस अमूल्य रत्न का 04 जुलाई 1902 को बेल्लूर मठ, कलकत्ता में परलोक गमन हो गया। हम उनके द्वारा देश की युवाशक्ति के लिए किए गए कार्यों को कभी भुला नहीं सकते। मां भारती को दी पहचान स्वामी विवेकानंद ने।। विश्व को दिया ज्ञान स्वामी विवेकानंद ने। ऐसे युगपुरुष को उनके जन्म दिवस पर शत शत नमन,।।!

सविता गुप्ता, प्रयागराज

नमन स्वामी विवेकानंद

वह बता कर हैं गए
आनंद जो विवेक में है।।
देव दर्शन में सफलता
भक्ति के अतिरेक में है।।
राष्ट्र की अवधारणा यह
स्व संस्कृति अमर रहे
हिंद की, हिंदू की रक्षा
स्वधर्म के अभिषेक में है
नमन स्वामी विवेकानंद

हेमंत बोर्डिया

देश का युवा

मिले जब ज्ञान के मोती तो अक्षर छंद बन जाए,
मुसीबत में भी हर इक क्षण सदा आनन्द बन जाये,
भरे अध्यात्म तन-मन में औ रक्खे राष्ट्रहित ऊपर,
समझ लो देश का युवा विवेकानन्द बन जाये।

नरेंद्रपाल जैन

भारत भाल के ओज केंद्र

हे जननी के दुलारे नरेंद्र,
भारत भाल के ओज केंद्र।
वेद वेन्दान्त ज्ञानी ज्ञानेंद्र,
परमहंस शिष्यदल शिष्येन्द्र।
केसर देस, भगवा वाणी
सनातन भेस,..भाव धानी,
हिंद महल ,..जन्मे राज राजेंद्र।
हे जननी के दुलारे नरेंद्र ।
मिटे राग द्वेष,..
सकल सर्व आनंद दिन विशेष,..
आज आये विवेकानंद
नरसिंह गरजे,.. गरजे महा महेन्द्र
हे जननी के दुलारे नरेंद्र,...
काली तट गंगा धाम दक्षिणेश्वर
गुरु रामकृष्ण साक्षात सद्रश्य ईश्वर
मानव संस्कार कि हुँकार मानवेंद्र
हे जननी के दुलारे नरेंद्र ।
भारत भाल के ओज केंद्र,..!

डॉ. रवि बंसल

एक और विवेकानन्द

आज आवश्यकता है,
एक और विवेकानन्द की।
कुशाग्र बुद्धि, मेधावी,
युवा शक्ति के प्रेरणास्रोत,
भारतीय संस्कृति के संरक्षक की,
एक और विवेकानन्द की।
ज्ञान का भंडार हो,
स्वच्छन्द हो, मकरन्द हो,
प्रखर हो, उजास हो, आगाज़ हो,
संघर्ष का फिर नाद हो,
एक और विवेकानन्द हो।
युगनायक जो बन जाए,
लक्ष्य प्राप्ति की राह,
आकर वो दिखा जाए,
भूले भटके युवाधन को,
सन्मार्ग पर चलना सिखा जाए,
योगी कुल का नायक बन,
ध्वजवाहक बन, युगदृष्टा बन, दीपक बन,
ओजस्वी तेज जगा जाए,
अब एक विवेकानन्द आ जाए।

पिंकी परुथी "अनामिका"
बारां, राजस्थान

मनहरण घनाक्षरी

1.
सोई हुई चेतना को,जिसने जगाया मीत,
पूर्ण ब्रह्माण्ड़ का वह,सूर्य देव चंद था|
ब्रम्हचर्य में था लीन,प्रेम की बजाई बीन,
प्रज्वलित अंग अंग,हिय में आनंद था||

मौन में अपार शक्ति,शून्य में समाया विश्व,
जीवन की परिभाषा, मकरंद छंद था,
विश्व के पटल पर,स्वर गूँजे भारती का,
पहचान देने वाला,सो विवेकानंद था||

2.

जाग जाग रे जवानी,बन थोड़ी स्वाभिमानी,
शारू और सलमान, काम नही आएंगे||
चलचित्र हैं विचित्र ,नग्नता के सारे चित्र,
इन्हें मत देख प्यारे, हमें भटकाएंगे||
तड़का विदेशी छोड़, संस्कार अपने जोड़,
पथ विवेकानंद सा, चल अपनाएंगे|
भारती की आन वान,खो न जाये पहचान,
विश्व गुरु था ये देश, गुरुता दिखाएंगे||

जितेन्द्र चौहान "दिव्य"

हे विवेक

विवेक के विवेक से, विवेक था फ़ैला हुआ !
विवेक के जाते ही देखो, देश ये मैला हुआ !!
ज्ञान के वो सागर थे, शांति के वो दूत थे !
अहिंसा के थे पुजारी, भारत के सपूत थे !!
भारतीय संस्कृति का, करते वो सम्मान थे !
हिन्दुओं के गौरव थे, देश का अभिमान थे !!
गीता ज्ञान देने वो, जाते थे विदेश में !
लगता मानो गीता खुद ही, आयी मनुज वेश में !!
हर तरफ फ़ैली है आज, असभ्यता और गंदगी !
जरूरत है फ़िर से हमें, उसी ज्ञान पूंज की !!
हे विवेक,
इक बार फ़िर से, भारत में अवतार लो !
फ़ैलाओ ज्ञान धारा, दूर करो अंधकार को !!

अमित अग्रवाल 'मीत'

स्वामी विवेकानंद

पिता जिनके विश्वनाथ दत्त प्रख्यात अधिवक्ता
माता जिनकी भुवनेश्वरी देवी सादगी धार्मिकता से परिपूर्ण।
थी उनकी एक संतान नरेन्द्र
एक ऐसी शख्सियत
जिसने देश विदेश में,
भारतीय संस्कृति को एक विशिष्ट पहचान दिलाई
बालपन से ही थे जो निर्भय स्वाभिमानी
माता पिता के विचारो से जो थे प्रभावित
साथ ही नरेन्द्र में भी वाकक्षमता थी इतनी अदभुत
जो कर जाती थी हर किसी को मंत्रमुग्ध
नरेन्द्र के तर्कों के समक्ष सब नतमस्तक हो जाते।
ब्रम्हसमाज के अनुयायी संत
रामकृष्ण परमहंस जिनके गुरु है कहलाते
गुरुओ की प्रशंसाओं से जो कभी श्रुतिधर
तो इन्द्रियों को बस में कर, केवल पवन आहार ले
पबहारी नाम से शोभा बढ़ाते ।।
प्राणियों के दुख -दर्द से जो विचलित हो जाते
संन्यास लिया जब बदला जीवन
साहित्य दर्शन और इतिहास का करते प्रचार
नरेंद्र अब स्वामी विवेकानंद जी थे कहलाते
युवाओ के प्रेरणास्रोत व्याख्यान जिनके नव ऊर्जा का संचार कर जाते
रामकृष्ण हंस ,रामकृष्ण मिशन
जिनके नाम से जाने जाते ।।
अल्मोड़ा से कोंलबो तक व्याख्यान है छाये
द्रढ संकल्प जिनका आधार
उठो जागो और तब तक ना रुको
जब तक लक्ष्य प्राप्त ना हो जाये
जिनके थे ऐसे विचार ।
भारत माता के ऐसे सपूत शिरोमणि संत विवेकानंद जी को
मेरा शत् शत् नमन बार बार,...!

नवनीता कटकवार

स्वामी विवेकानंद से गुणी बनो

स्वामी विवेकानंद से गुणी बनो
बनो वीर तुम सहनशील बनो
घृणा त्याग तुम उठो
विवेक से तुम सेवाभावी बनो
पिया विवेक ने गुरु के ख़ून का प्याला
घृणा त्याग दिया प्रमाण
गुरु की सेवा का निहस्वार्थ भाव का
बनो तुम भी उस महान विवेक सा
शांतिदूत बन विवेक ने शांति की
परिभाषा सिखलाई जन जन को
गुरु के आदेशों का पालन कर
गुरु महिमा गान सुनाई जन जन को

अदिति रूसिया, वारासिवनी

दुनिया में हुये चंद स्वामी विवेकानंद

विवेक के स्वामी थे
धर्म मर्मज्ञ विज्ञानी थे

विश्व पटल छा गये
बनकर सुगंध

स्वामी विवेकानंद

विराट कर्मकार थे
युवाओं का विचार थे

सत्य पथ से रखा
अटूट अनुबंध

स्वामी विवेकानंद

नमन हम उन्हें करे
अनुसरण उनका करे

विवेका से विचारवान
दुनिया में हुये चंद

स्वामी विवेकानंद

नवीन जैन अकेला

युग पुरुष विवेकानंद को समर्पित

नमन ! भारत के उस दिव्य विवेक को,
जिसने वसुधा का वैभव चमकाया।
भारत भव्य विराट का जीवन दर्शन ,
दुनिया के कोने कोने तक पहुँचाया।
स्पर्श किया रामकृष्ण के परम हंस ने,
तब अलौकिक चेतना दीप्त हुई मन में।
त्याग तपस्या का मधुवन लगा महकने,
मानव सेवा का मंत्र दिया जन जन में।
शब्द शब्द बन तीर भेदता धड़कन को,
अपनी अभिव्यक्ति का लोहा मनवाया।
नमन ! भारत के उस दिव्य विवेक को,
जिसने वसुधा का वैभव चमकाया।
गुंजायमान हुआ हिंदी भाषा का गौरव,
जब उदघोष हुआ बंधु भगिनी बोधन।
शिकागो का जन मन जीवन हतप्रभ,
सुनकर निष्काम योग का तत्व विवेचन।
तरुणाई को मिली दिशा राष्ट्र सृजन की,
निर्माण का परचम भारत में फहराया।
नमन ! भारत के उस दिव्य विवेक को,
जिसने वसुधा का वैभव चमकाया।

प्रदीप सोनी 'शून्य'

तांका चतुष्पद

विवेकानंद
राष्ट्र ज्ञान पुरुष
जन्म जयंती
युवा दिवस पर
हार्दिक बधाइयाँ|1|

विवेकानंद
रामकृष्ण के शिष्य
ज्ञान जो बांटा
पश्चिम था सयाना
विश्व ने लोहा माना|2|

विवेकानंद
शून्य में विराटता
खोजने वाले
भारत माँ के लाल
हिन्दुस्तान के भाल|3|

विवेकानंद
नरों में बने इंद्र
नरेंद्र नाम
राष्ट्रीय स्वाभिमान
विश्व को दिया ज्ञान|4|

कैलाश बिहारी सिंघल

बन गए आदर्श

बन गए आदर्श जिनके वह
युवा पथ पर चल पड़े
मार्गदर्शक बन रहे वह
अडिग निर्भय थे हो खड़े।
पितृ इच्छा थी यही कि उनको
पाश्चात्य शैली सिखाएंगे
परमात्मा को पाने क्या पता था
नरेन्द्र नये ही पथ पर जाएंगे।
घर की दशा ने भी मन से
अतिथि सेवा भाव न जाने दिया
स्वयं भूखे प्यासे रहकर भी
अतिथि देवो भव मनन किया।
सुन प्रशंसा रामकृष्ण की गये थे
तर्क विचार ले मन में बहुत
आत्म साक्षात्कार पाकर बन गए
पर म शिष्य गुरु की चाहत।
गुरु चरणों में कर समर्पित
उनको अति आनंद हुआ
ले लिया सन्यास नाम भी
नरेन्द्र से विवेकानंद हुआ।

बहुत की गुरुसेवा थी गुरु भक्ति
गुरु के प्रति अनन्य निष्ठा
नींव विलीन किया अस्तित्व
बन सके तब जगत दृष्टा।
दीन हीन समझा जिसे, विदेश में
मिला मान उसके भाल था
ज्योति तत्वज्ञान की दी जिन्हें
भक्त उसके हुए वो भारत का लाल था
आध्यात्म विद्या और भारत दर्शन
बिना
विश्व होगा अनाथ ये विश्वास था
पर ह्रदय में उनके रामकृष्ण जैसे
गुरुदेव का वास था।
उनके ही आशीषों से जग में
उनके नाम का डंका बजा
पर जाना भी सत्य है 1902
जुलाई 4 को विश्व को तजा।
देह त्याग दिया था उसने
देश का गौरव जिसने बुलंद किया
नरेन्द्र ने विवेक से अपने
खुद को विवेकानंद किया।

किरण मोर कटनी

सच्चे सपूत

नमन है आपको
आप भारत के
सच्चे सपूत
भारत माता की शान लिए
जय भारत का गुणगान लिए
पावन विचारधारा
संदेश दिया न्यारा
आत्मा को जगाने का
संकल्प प्यारा
आप जैसे वीरों से
सम्मान बढ़े
भारत माँ की •••••!
आज भी गूँजे ह्रदय में
आपकी ओज भरी वाणी
उठो,जागो ,सिंहो
तब तक न रूको
जब तक लक्ष्य प्राप्ति न हो
जियो दूसरों के लिए
खुद के लिए
जीते हैं सभी
ईश्वर है भीतर
बाहर क्यों हो ढूंढते
अपनी दुर्बलता दूर करो
नए भारत का निर्माण करो
इन्हीं बातों से ही
बदल दिया
समाज को आपनें ••••!
आपने कहा राष्ट्र हमारा
जन्म आपको देकर
भारत भूमि पवित्र हुई
रोम रोम पुलकित हुआ
गाकर ऐसे
दिव्य चरित्र को
ऐसे महान सपूत
विवेकानंद जी हुए
कोटि कोटि नमन है
हाँ नमन है आपको ••••!

अनिता मंदिलवार सपना
अंबिकापुर सरगुजा छतीसगढ़

उठो, जागो और चल दो

हे भारत के युवा शक्ति !
उठो, जागो और चल दो ,
कदम कभी ठिठके नहीं,
कदम कभी भटके नहीं,
राष्ट्र का नव निर्माण कर दो ।
उठो, जागो और चल दो ।
हे भारत के युवा शक्ति !
उठो, जागो और चल दो ,
विवेकानंद जी आदर्श हों,
लक्ष्य भी उत्कर्ष हो ,
उत्साह से मन भर दो ।
उठो, जागो और चल दो ।
हे भारत के युवा शक्ति !
उठो, जागो और चल दो ,
नारियों के प्रति सम्मान हो,
मातृभूमि अपना महान हो,
त्याग बलिदान का संकल्प कर दो ।
उठो, जागो और चल दो ।

पारसनाथ जायसवाल 'सरल'
मनकापुर, गोण्डा

फिर विवेकानंद आ जाएं

हां,
मैं अब भी युवा हूं।।
तो क्या हुआ गर
देख चुकी जीवन के
बत्तीस सावन अब तक
तो क्या हुआ जो रम सी गई हूं
गृहस्थी और जीवन की आपाधापी में
मैं मन से, भाव से, विचारों से
अब भी युवा हूं।
अब भी मुझे औरों से ज़्यादा
खुद से आस है।।।
मानती हूं कि सबकुछ
कर सकने की शक्ति मेरे ही पास है!!
जल रही है ये जोत आस की
क्यूंकि स्वामी जी की
अनमोल सीख सदा साथ है!
वो पुण्यात्मा जिन्होंने
संसार को विवेक के आनंद से
कराया अवगत
वे जिनके शब्द शब्द में गूंजता है भारत।।।
जो एक पुकार से
आज भी भर देते हैं नस नस में
जज़्बा कुछ अलग करने को
बदलाव की आंधी लाने को
और जीवन के हर कदम से
भारत को फिर कुंदन सा दमकाने को!!
पर मन दुखता तो है
जब नौजवानों को देखती हूं
ऐसे महापुरुष को बिसराते।।।
जो जकड़े हुए हैं बेड़ियों में अब भी
और शान समझते अपनी

जब पाश्चात्य संस्कृति को वे अपनाते
टीस और बढ़ती है जब
भारत और भारतीयता
को अपना कहने में वे हिचकिचाते
सोचती हूं, काश!
वे बैठते कुछ देर स्वामी के सानिध्य में
सुनते उनके वचन भी कभी
आइपॉड के तेज़ शोर के बीच तो समझ पाते।।।
कि कितनी असीमित क्षमताओं का स्वयं भंडार हैं वो
उन्नति की तलाश में
उत्थान की खोज में
पश्चिम का मुंह ताकने वाले
बदलाव की धुरी स्वयं हैं वो!
तन से युवा हैं वे पर
मन से उदासीन, निराश, मृतप्राय
काश उन्हें झकझोर कर जगाने
फिर से कोई विवेकानंद आजाए।।।
फिर से कोई विवेकानंद आजाए!

- कृति गुप्ता, नई दिल्ली

मैं विवेकानंद बोलता हूं!!

मैं विवेकानंद बोलता हूं!! सुनो! सब ध्यान से सुनो!!
जो भूल गए हैं भारतवासी, वो सब राज खोलता हूं,,,,!!
भूल रहे हैं धीरे- धीरे सब
अच्छी आदर्शों की बातें।
दिन सबके दुविधा में बीतें
संकट में काली रातें।।
मैं आज भी हूं भारत भू पर, मेरे अरमान अधूरे हैं!
मैं खोज रहा हूं द्वार-द्वार, चांदी के लगे कंगूरे हैं।।
न मोह दिखे जीवन से जीव को
न कुदरत पर विश्वास रहा।
भ्रमजाल हुई अनमोल जिंदगी
उलझा-उलझा हर हाल रहा।।
प्रेम है अमृत मानवता का, नफ़रत के सौ स्त्रोत बहे।
प्रकृति अपनी सदा सहायक, इन बिगड़ैलों को कौन कहे।।
है परमेश्वर का वास यहां पर
हर कण में,हर एक मन में।
पर भटक रहा मानव देखो
ढूंढ रहा है तन में,धन में।।
जितने शुद्ध विचार हुए, उतना ही जीवन सफल रहा।
ये पाप भरी कपटी बातें, करने को मैंने नहीं कहा।।
खान-पान के वैभव में ही
चिर जीवन का योग छिपा।
हर बल हासिल हो नित्य योग से
मैं कहता रहा सन्मार्ग दिखा।।
निज संस्कृति गौरव गान यहां, हर भारत वासी करता रहे।
निज भाषा हित अभिमान सदा, हर बच्चा-बच्चा भरता रहे।।
अपनी जननी अपना गौरव
निज गुरु से कोई नहीं महान।
मात पिता और गुरु चरणों में
रहा समाहित सकल जहान।।

राष्ट्र-धर्म स्व-धर्म हमारा, विश्व विजेता अपना मान।
लक्ष्य हो सत्य सनातन सबका, शौर्यवान हों सभी युवान।।
शिक्षा साधन हो पालन का
बढ़ता रहे नित नीति ज्ञान।
चहुं दिशा में गूंजे गाथा
उन्नत खोज करे विज्ञान।।
अक्षय ऊर्जा असीमित आशा, सफल करे हर लक्ष्य महान।
नूतन कौशल नवल कामना, जीत जाइए सकल जहान।।
कर्मठ ऊर्जावान युवा सब
उठो बढ़ो बढ़ते ही जाओ।
जो सुख-सागर सूख गया है
उसमें अमिय की गंगा लाओ।।
रुको नहीं बिन मंजिल पाए, चाहे जान भले ही जाए।
"मौज" जिंदगी सत्कर्मी की, हर हाल देश के काम आए।।

विमला महरिया "मौज"

युवा महानायक

युवा महानायक विलक्षण प्रतिभा के धनी,
प्रबुद्ध, दार्शनिक महान विचारक ये,
12 जनवरी 1863 कलकत्ता में जन्मे ,
माता भूनेश्वरी देवी, विश्वनाथ की संतान ये,
अंहकार, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, आलस को,
जीवन की राह के सबसे बड़े रोड़े माने ये,
मानव जाति, धर्म के हित में सभी को,
ऐसे विकारो को गंगा में डूबाने को कहते ये,
हर सभा को भाई-बहनो से सम्बोधित कर,
अपने व्याख्यानो की शुरुआत करे ये,
देश में क्या, विदेश में भी घूम-घूम कर,
अपना और भारत देश का नाम करे ये,
ऐसे व्यक्तित्व के धनी स्वामी विवेकानंद,
आज भारतीय युवाओ के प्रेरणा स्रोत बने,
सूर्य नमस्कार के संग इनके विचारो का रमा,
भारतवासी अपना कर जय जय गुणगान करे।

रमा प्रेम - शांति,बालाघाट

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन क्रान्ति का आरंभ

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन की यात्रा

प्रथम अन्तरा शब्दशक्ति से सृजन शब्दशक्ति सम्मान 2017 भोपाल में आयोजित जिसमें विमोचत हुआ साझा संग्रह।

द्वितीय अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान 2018 इंदौर में आयोजित जिसमें विमोचत हुए 8 साझा संग्रह और 1 एकल पुस्तक।

महिला दिवस 2018 में विमोचित हुए वूमन आवाज साझा संग्रह, जिसमें शामिल रही 50 से अधिक महिलाएँ।

लघु पुस्तिका क्रान्ति का आरंभ हुआ सृजन समीक्षा से, जिसमें 49 किताबों का हुआ विमोचन।

इतिहास में हिन्दी आन्दोलन का बालाघाट में विमोचन।

भोपाल में आयोजन हुआ वूमन आवाज अवार्ड का जिसमें 55 महिलाओं की 66 पुस्तिकाओं का विमोचन।

मातृभाषा उन्नयन संस्थान के सहयोग से हिन्दी आन्दोलन को समर्पित 8 पुस्तिकाओं सहित 5 अन्य पुस्तकों का विमोचन।

दिल्ली में अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान 2019 के आयोजन में 60 से अधिक पुस्तकें विमोचित व रचनाकार सम्मानित।

दिल्ली में मातृभाषा उन्नयन सम्मान 2019 के आयोजन में 30 से अधिक पुस्तकें विमोचन और रचनाकार सम्मानित

- मात्र ११ माह की अवधि से सेवारत
- दौ सो अधिक किताबें प्रकाशित
- ५०० से अधिक सम्मानित लोग
- १५० से अधिक एकल पुस्तिकाएँ
- लगभग १५ आयोजन इन ११ माह में
- ५ स्थायी अन्तरा शब्दशक्ति के सम्मान

978-93-86666-66-6

मूल्य- 50/-